पूँछ वाला आदमी

श्री मुकेश कुमार शर्मा
जे.ई. (वरिष्ठ ग्रेड)

अगर आदमी की पूँछ होती,
तो उसकी कद्र मूँछ से कम न होती
कोई उस पर उस्तरा फिरवाता
तो कोई उस पर बाल रखाता
कोई तेल की मालिश करता
तो कोई प्रतिदिन शैम्पू में डूबोता
यदि वाल भूरे हो जाते
तो उन पर डाई की जाती
हर आदमी की पूँछ निराली होती
किसी की तारीफ तो किसी की बुराई होती
यार क्या पूँछ पायी है
लगता है किसी कारखाने में बनवायी हैं
मिलिट्री या पुलिस में भर्ती होते
तो पूँछ एक पैमाना होती
यदि एक एमएम (mm) भी कम रह जाये
तो भर्ती नही हो पाती
पहले पूँछ पर ध्यान दो
फिर भर्ती के लिए आना
पूँछ ही तो होती है फिटनेस का पैमाना
यदि पूँछ नहीं बढ़ा सकते
तो भर्ती होकर क्या करोगे ?
अपनी पूँछ की सेवा न कर सके
देश की सेवा क्या करोगे ?
अगर सभी यहां भर्ती हो गये
तो रिसर्च में कौन जायेगा ?
सिविल डिपार्टमेन्ट तो खाली रह जायेगा
तो बात पूँछ पर अटक जाती
लड़की तो ठीक है, पूँछ थोड़ी भारी है
इतनी नहीं चल सकती, हमारी लाचारी है
लड़के की पूँछ में भी कमी गिनाई जाती
किसी की लम्बी तो किसी की छोटी बतायी जाती

अरे पूँछ क्या देखते हो लड़के की नौकरी देखो
ऐसी नौकरी वाला नहीं मिलेगा
कुछ भी हो इतनी छोटी पूँछ का नही चलेगा ।
फिर बनती नई नई पोशाकें
कुछ टैलर ' पूँछ -स्पेस्लिस्ट ' कहलाते
दुकान के वाहर बड़ा सा पोस्टर लगवाते
कभी चुस्त तो कभी ढीली का फ़ैशन चलाते
रोग की जांच भी पूँछ पकड़कर की जाती
पूँछ के तापमान को डाक्टरी मान्यता दी जाती
चमचागिरी में भी पूँछ अहम रोल निभाती
अब तो चमचे छाटने में परेशानी होती है
तब पूँछ हिलाते ही पोल खुल जाती
मूँछ की तरह लोग पूँछ के भी रिकार्ड बनाते
पूँछ के वल पर कितने गीनीज बुक में अमर हो जाते
पर बनाने वाले तूने सब खूबियां बनायी
फिर पूँछ लगाने में, कंजूसी क्यों दिखाई
शायद यदि आदमी के पूँछ लग जाती
तो आदमी और जानवर में भेद नहीं हो पाता
हो सकता है आदमी भी जानवरों की तरह हैवान हो जाता
लेकिन दुख है कि आदमी प्रकृति को झुटला रहा है
हैवानियत की सभी सीमाओं को छोटा बना रहा है
अपने कारनामों से जानवरों को भी लजा रहा है
बिना पूँछ के भी आदमी कम,
जानवर ज्यादा नजर आ रहा है ।

****